अ.भा.कालिदास समारोह, उज्जैन

मध्यप्रदेश शासन के तत्त्वावधान में विक्रम विश्वविद्यालय एवं कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन द्वारा 4 से 10 नवम्बर, 2022 तक अखिल भारतीय कालिदास समारोह का आयोजन किया गया। पूर्वरंग में गढ़कालिका देवी के मन्दिर में वागर्चन की विधि 2 नवम्बर को सम्पन्न हुई। कलशयात्रा का आयोजन 3 नवम्बर को प्रातः 10.00 बजे शिप्रा तट, रामघाट से किया गया।

3 नवम्बर को रात्रि 07:00 बजे नान्दी के अन्तर्गत डॉ. विवेक बनसोड़, उज्जैन द्वारा मंगलवाद्य वादन एवं पद्मश्री सुश्री मालिनी अवस्थी, लखनऊ द्वारा गायन की प्रस्तुति की गई।

समारोह का शुभारम्भ 4 नवम्बर को मध्यप्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल के मुख्य आतिथ्य में हुआ। सारस्वत अतिथि श्री तुलसीपीठाधीश्वर पद्मविभूषण जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी, चित्रकूट थे। इस अवसर पर मध्यप्रदेश शासन की संस्कृति मंत्री माननीया सुश्री उषा ठाकुर, मध्यप्रदेश शासन के उच्चशिक्षा मंत्री माननीय डॉ. मोहन यादव, प्रो. विक्रम वि.वि., उज्जैन के कुलपति डॉ. अखिलेशकुमार पाण्डेय तथा संस्कृति संचालक श्री अदितिकुमार त्रिपाठी की गरिमामयी उपस्थिति थी। अतिथियों ने दूर्वा, मेघदूत के भोजपुरी अनुवाद तथा चित्रकला केटलॉग का लोकार्पण किया तथा 'विक्रमोर्वशीयम्' पर केन्द्रित चित्र एवं मूर्तिकला प्रदर्शनी का शुभारम्भ किया।

इसी संध्या संस्कृत नाटक 'मालविकाग्निमित्रम्' की प्रस्तुति श्री लोकेन्द्र त्रिवेदी, नईदिल्ली के निर्देशन में की गई।

5 नवम्बर को प्रातः 10 बजे राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम सत्र में 'भारतीय संस्कृति की दीपशिखा कालिदास' विषय पर आमंत्रित विद्वानों ने शोधपत्र प्रस्तुत किए। अपराह्ण 02:30 बजे राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का प्रथम सत्र आयोजित हुआ।

सायं 05:00 बजे पं.सूर्यनारायण व्याख्यानमाला का आयोजन भारतीयता के पर्याय कालिदास विषय पर हुआ। इसमें पद्मश्री प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, शिमला ने व्याख्यान दिया तथा सांस्कृतिक संध्या में सुश्री आयुर्धा शर्मा, उज्जैन द्वारा शास्त्रीय नृत्य कथक एवं पद्मभूषण श्री बुधादित्य मुखर्जी, कोलकाता द्वारा सितार वादन की प्रस्तुति की गई।

6 नवम्बर को आयोजित शोध संगोष्ठी में आमंत्रित विद्वानों ने शोधपत्रों का वाचन किया। अपराह्ण 02:30 शोध संगोष्ठी आयाजित की गई जिसमें आमंत्रित विद्वानों ने शोधपत्रों का वाचन किया। सायं 05:00 बजे 'रघुवंश की पाठालोचना' विषय पर पं.सूर्यनारायण व्यास व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इसमें प्रो. वसन्तकुमार भट्ट, अहमदाबाद ने व्याख्यान दिया। इसी संध्या शास्त्रीय नृत्य ओडिसी की श्री गजेन्द्र पण्डा एवं साथी, भुवनेश्वर एवं हिन्दी नाटक 'विक्रमसंवत्सर' श्री पियाल भट्टाचार्य, कोलकाता के निर्देशन में की गई।

7 नवम्बर को प्रातः 10:00 बजे संस्कृतकविसमवायः आयोजित हुआ। इसमें 20 कवियों ने संस्कृत काव्यपाठ किया। इसकी अध्यक्षता प्रो. मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी, इन्दौर ने की। इसके पश्चात् शोध संगोष्ठी का तृतीय सत्र आयोजित हुआ जिसमें विक्रम कालिदास पुरस्कार से चयनित शोधपत्र प्रस्तुत हुए।

सायं 05:00 बजे चित्रकला मर्मज्ञ कालिदास के नाटकों में व्यक्तिचित्र विषय पर महाकवि कालिदास व्याख्यानमाला आयोजित की गई। इसमें मुख्य वक्ता डॉ. पंकज भाम्बुरकर, पुणे थे। डॉ. हरिहरेश्वर पोद्दार, उज्जैन द्वारा शास्त्रीय नृत्य कथक तथा द्वितीय प्रस्तुति मालवी नाटक 'मालव कीर्तिगाथा', रंगमठ, उज्जैन द्वारा श्री विशाल कलम्बकर, उज्जैन के निर्देशन में की गई।

8 नवम्बर प्रातः 10 बजे शोध संगोष्ठी–चतुर्थ सत्र आयोजित हुआ। इसकी अध्यक्षता प्रो. केदारनारायण जोशी, उज्जैन ने की। सायं 05:00 बजे महाकवि कालिदास व्याख्यानमाला 'कालिदास की भौगोलिक यात्रा' विषय पर आयोजित की गई। इसमें डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित, उज्जैन ने व्याख्यान दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम की शृंखला में डॉ. खुशबू पांचाल, उज्जैन द्वारा शास्त्रीय नृत्य कथक तथा सुश्री मेथिल देविका, त्रिवेन्द्रम् द्वारा शास्त्रीय नृत्य मोहिनीअट्टम् की एकल प्रस्तुति की गई।

9 नवम्बर को सायं 05:00 बजे महाकवि कालिदास व्याख्यानमाला का आयोजन 'वैदिक संस्कृति एवं कालिदास' विषय पर किया गया। इसमें मुख्य वक्ता प्रो. राजेश्वरप्रसाद मिश्र, कुरुक्षेत्र थे। इसी रात्रि सुश्री आयुषी त्रिवेदी, उज्जैन द्वारा शास्त्रीय नृत्य कथक तथा सुश्री कौशिकी चक्रवर्ती, कोलकाता द्वारा शास्त्रीय गायन की प्रस्तुति की गई।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में संतूर वादन की प्रस्तुति डॉ वर्षा अग्रवाल, उज्जैन तथा भरतनाट्यम् शैली में ऋतुसंहार नृत्यानाटिका की प्रस्तुति सुश्री संध्या पुरेचा, नईदिल्ली के निर्देशन में की गई।

समारोह की समापन विधि 10 नवम्बर, 2022 को सायं 04:00 बजे पं.सूर्यनारायण व्यास सांस्कृतिक संकुल में माननीय सुश्री अनुसुईया उइके, राज्यपाल, छत्तीसगढ़ के मुख्य आतिथ्य में, पूज्य स्वामी रंगनाथाचार्य जी, रामानुजकोट पीठाधीश्वर, उज्जैन के सारस्वत आतिथ्य में, माननीया संस्कृति मंत्री म.प्र.शासन सुश्री उषा ठाकुर की अध्यक्षता में एवं म.प्र.शासन के उच्च शिक्षा मंत्री माननीय डॉ. मोहन यादव, माननीय श्री अनिल फिरोजिया, सांसद, उज्जैन–आलोट संसदीय क्षेत्र के विशिष्ट आतिथ्य में तथा माननीय श्री बहादुरसिंह चौहान, माननीय श्री पारस चन्द्र जैन, विधायक–उज्जैन–उत्तर एवं माननीय श्री मुकेश टटवाल, महापौर–उज्जैन, माननीय सुश्री वन्दना पाण्डे, उपसंचालक, संस्कृति संचालनालय, म.प्र., भोपाल की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुई। स्वागत भाषण एवं समारोह के प्रतिवेदन का वाचन प्रभारी निदेशक डॉ. सन्तोष पण्ड्या ने किया। आभार प्रदर्शन कुलपति प्रो. अखिलेशकुमार पाण्डेय, उज्जैन ने दिया। राष्ट्रीय कालिदास चित्र एवं मूर्तिकला प्रतियोगिता के विजेता कलाकारों तथा विक्रम कालिदास पुरस्कार के शोधपत्र लेखकों को पुरस्कृत किया। रात्रि में डॉ. संध्या पुरेचा, नईदिल्ली के निर्देशन में भरतनाट्यम् नृत्य नाटिका की प्रस्तुति तथा डॉ. वर्षा अग्रवाल, उज्जैन द्वारा संतूर वादन किया।

अकादमी परिसर में राष्ट्रीय कालिदास चित्र एवं मूर्तिकला प्रदर्शनी तथा कलाकारों द्वारा निर्मित रांगोली एवं अश्विनी शोध संस्थान, महिदपुर द्वारा संयोजित प्राचीन मुद्रा प्रदर्शनी लगाई गई।

कालिदास
समारोह

समारोह

वाल्मीकि समारोह, चित्रकूट

श्रीराम संस्कृत महाविद्यालय, चित्रकूट के सहकार से वाल्मीकि समारोह का आयोजन 18–19 नवम्बर, 2022 को चित्रकूट में किया गया। उद्घाटन के मुख्य अतिथि सद्गुरु सेवासंघ, चित्रकूट के निदेशक ट्रस्टी श्री बी.के.जैन, विशिष्ट अतिथि श्रीमती उषा जैन, सारस्वत अतिथि प्रो. तुलसीदास परौहा, उज्जैन थे। इसके पश्चात् 'संस्कृतसाहित्ये श्रीसीता' शीर्षक शोध संगोष्ठी का सत्र आयोजित हुआ। इसकी अध्यक्षता प्रो. कमलेश थापक, चित्रकूट ने की। इसमें 8 विद्वानों ने आलेख प्रस्तुत किए। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भक्ति गायन सुश्री प्रमिला कटारा, पेटलावद के निर्देशन में एवं जनजातीय नृत्य श्री गंगाप्रसाद डामर, ग्राम–भामल, तहसील–थांदला के निर्देशन में की गई।

द्वितीय दिवस शोध संगोष्ठी एवं समापन कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसके मुख्य अतिथि श्री अभय महाजन, निदेशक, दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट थे। अध्यक्षता महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट के कुलपति, प्रो. भरत मिश्र ने की। शोध संगोष्ठी के सत्र की अध्यक्षता डॉ. रामदत्त मिश्र, मथुरा ने की। संगोष्ठी में 12 विद्वानों ने शोधपत्रों का वाचन किया। इसके पश्चात् सुश्री अर्चना कटारा, ग्राम–गंगाखेड़ी, तहसील–पेटलावद, जिला–झाबुआ के निर्देशन में रामायण केन्द्रित नृत्य नाटिका की प्रस्तुति कथक शैली में हुई।

कल्पवल्ली समारोह, उज्जैन

वैदिक परम्परा के संवर्धन के उद्देश्य से कल्पवल्ली का आयोजन 19–20 जनवरी, 2023 को किया गया। स्वामी वेदतत्त्वानन्द, भोपाल, प्रो. अजिता त्रिवेदी एवं डॉ. केदारनाथ शुक्ल, उज्जैन अतिथि थे। इसमें आमन्त्रित विद्वानों ने वेदशाखास्वाध्याय किया, अद्वैत वेदान्त पर केन्द्रित शोधपत्रों की प्रस्तुति की तथा परिष्कृति संस्था, उज्जैन द्वारा श्री शुभम सत्यप्रेमी के निर्देशन में सरमा–पणि संस्कृत नाटक की प्रस्तुति की गई।

कालिदास प्रसंग, मन्दसौर

ऐतिहासिक नगर मन्दसौर में कालिदास साहित्य पर केन्द्रित शोधसंगोष्ठी, लोकप्रिय व्याख्यान का आयोजन 21–22 जनवरी, 2023 को हुआ। विधायक श्री यशपालसिंह सिसौदिया तथा प्रो. बालकृष्ण शर्मा पूर्व कुलपति विक्रम वि.वि., उज्जैन अतिथि थे। सुश्री स्मृति एम.पी., सुश्री बाला विश्वनाथ, टुमकुर, कर्नाटक तथा सुश्री हर्षिता महावरिया, श्री प्रफुल्लसिंह गेहलोत, देवास द्वारा कथक एवं भरतनाट्यम् नृत्य की प्रस्तुति एवं प्राचीन अस्त्र–शस्त्रों एवं कालिदास साहित्य पर केन्द्रित चित्रों की प्रदर्शनी का संयोजन भी इस अवसर पर किया गया।

भवभूति समारोह, ग्वालियर

दिनांक 30–31 जनवरी, 2023 को भवभूति समारोह में छात्रों की प्रतियोगिताएँ, शोधसंगोष्ठी, संस्कृतकविसम्मेलन तथा संस्कृत नाटक उत्तररामचरितम् की प्रस्तुति प्रेरणा जनशिक्षण समिति, ग्वालियर द्वारा की गई। उद्घाटन के अतिथि राजामानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर के कुलपति डॉ. साहित्यकुमार नाहर, जीवाजी विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति डॉ. डी.एस. गोस्वामी एवं वरिष्ठ संस्कृत विदुषी प्रो. मनुलता शर्मा, वाराणसी थे। नगर निगम ग्वालियर की ओर से विद्वानों का सम्मान महापौर श्रीमती डॉ. शोभा सिकरवार द्वारा किया गया।

भर्तृहरि प्रसंग, उज्जैन

भर्तृहरि प्रसंग का शुभारम्भ 13–14 फरवरी, 2023 माननीय डॉ. विरूपाक्ष जड्डीपाल, सचिव, महर्षि सांदीपनि वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के मुख्य आतिथ्य में, माननीय डॉ. मोहन गुप्त, वरिष्ठ संस्कृत विद्वान् एवं पूर्व आयुक्त उज्जैन की अध्यक्षता एवं डॉ. केदारनाथ शुक्ल, वरिष्ठ संस्कृतविद् के सारस्वत आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। उद्घाटन पश्चात् सुश्री प्रीति बोरलिया एवं समूह, उज्जैन द्वारा भर्तृहरि एवं लोकगायन की प्रस्तुति की गई।

14 फरवरी, 2023 को आमन्त्रित विद्वानों ने भर्तृहरि साहित्य पर केन्द्रित शोधपत्रों की प्रस्तुति की। संगोष्ठी पश्चात् सुश्री अभिवृद्धि गेहलोद एवं समूह, उज्जैन द्वारा शास्त्रीय नृत्य कथक की प्रस्तुति की गई।

शांकर समारोह, ओंकारेश्वर

शांकर समारोह का शुभारम्भ 17–18 फरवरी, 2023 माननीय श्री प्रकाश परिहार, अध्यक्ष नगर पंचायत, ओंकारेश्वर, माननीय डॉ. सदानन्द त्रिपाठी, उज्जैन के आतिथ्य में हुआ। इस अवसर पर श्री दीपक भिलाला एवं साथी, शाजापुर द्वारा लोक एवं भक्तिगीतों की प्रस्तुति की गई। शोध संगोष्ठी का सत्र डॉ. हरिराम रैदास, भोपाल की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। इसमें 7 विद्वानों ने शोधालेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय दिवस श्री रामचन्द्र गांगोलिया एवं साथी, उज्जैन द्वारा भक्ति संगीत की प्रस्तुति एवं सुश्री भावना कटारिया, उज्जैन द्वारा शास्त्रीय नृत्य की प्रस्तुति की गई।

भोज समारोह, धार

2–3 मार्च, 2023 को भोज समारोह का शुभारम्भ माननीय श्री आशीष बसु, धार के मुख्य आतिथ्य में, माननीय डॉ. नीलाभा तिवारी, भोपाल के सारस्वत् आतिथ्य में, मा. श्री अनिल जैन, धार एवं डॉ. एस.एस. बघेल, धार के विशिष्ट आतिथ्य में हुआ। इस अवसर पर आमन्त्रित कलाकारों ने क्रांतिसूर्य टंट्या शीर्षक नाटक की प्रस्तुति की तथा जनजातीय लोकनृत्यों की प्रस्तुति की। संगोष्ठी के सत्र में आमन्त्रित विद्वानों ने शोधपत्रों का वाचन किया

संस्कृत कवि सम्मेलन, उज्जैन

संस्कृत रचनाधर्मिता के संवर्धन के उद्देश्य से अकादमी द्वारा 10 मार्च, 2023 को होली के पावन पर्व पर संस्कृतकविसमवाय का आयोजन उज्जैन में किया गया जिसकी अध्यक्षता वरेण्य विद्वान् प्रो. विन्ध्येश्वरीप्रसाद मिश्र, वाराणसी ने की तथा विशिष्ट अतिथि इतिहासविद् डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित थे। इस अवसर पर आमंत्रित कवियों ने संस्कृत के अनेक छन्दों में वसन्त, होली, राष्ट्रभक्ति तथा महाकवि कालिदास पर केन्द्रित रचनाओं का सुमधुर पाठ किया। इसके पश्चात् श्री महेश निर्मल तथा साथियों ने संस्कृत के गीतों की मधुर प्रस्तुति की।

अ.भा.राजशेखर समारोह, जबलपुर

15 से 17 मार्च, 2023 तक अ.भा. राजशेखर समारोह का आयोजन जबलपुर में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ म.पाणिनि वै. एवं संस्कृत वि.वि., उज्जैन के मुख्य आतिथ्य में प्रो. कपिलदेव मिश्र, कुलपति, रा.दु.वि.वि., जबलपुर की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर शोधसंगोष्ठी के चार सत्र, लोकप्रिय व्याख्यान, छात्रीय प्रतियोगिताएँ तथा शास्त्रीय नृत्यों की प्रस्तुति हुई। समारोह का समापन प्रो. रहसबिहारी द्विवेदी, प्रयागराज के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

जनजातीय लोक चित्रकला शिविर, बांधवगढ़

गोंड शैली में कालिदास के कुमारसम्भवम् पर केन्द्रित जनजातीय लोकचित्र कला शिविर का आयोजन दिनांक 22 से 29 मार्च, 2023 तक द सन रिसोर्ट, ताला, बांधवगढ़, जिला–उमरिया में किया गया। शिविर का उद्घाटन दिनांक 22 मार्च को माननीय श्री के.डी.त्रिपाठी, कलेक्टर, जिला–उमरिया के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

समापन दिनांक 29 मार्च को वरिष्ठ चित्रकार पद्मश्री जुधईया बाई, उमरिया के मुख्य आतिथ्य एवं माननीय नागेन्द्रसिंह तिवारी, प्राचार्य, शा.उ.मा.वि. ताला, बांधवगढ़ की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कलाकारों द्वारा निर्मित चित्रों की प्रदर्शनी का संयोजन एवं कलाकारों को प्रमाण–पत्र प्रदान किए जायेंगे।

संस्कृति विभाग म.प्र. शासन का आयोजन
जनजातीय लोकचित्र शिविर

संस्कृति विभाग म.प्र. शासन का आयोजन
जनजातीय लोकचित्र
SHOT ON REDMI 7
AI DUAL CAMERA

जनजातीय लोकचित्र शिविर

सारस्वतम् लोकप्रिय व्याख्यान, 25 अप्रैल, 2023 – रतलाम

शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रतलाम के सहकार से 25 अप्रैल, 2023 को सारस्वतम् लोकप्रिय व्याख्यानमाला के अंतर्गत व्याख्यान एवं संस्कृत काव्यमाधुरी (संस्कृत गीतों का गायन) का आयोजन किया गया।

मुख्य वक्ता प्रो. अंजना शर्मा, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली थीं। प्रो. वाय.के. मिश्रा, प्राचार्य, शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रतलाम विशिष्ट अतिथि तथा डॉ. मुरलीधर चाँदनीवाला, वरिष्ठ संस्कृत विद्वान्, रतलाम अध्यक्ष थे। व्याख्यान पश्चात् आमन्त्रित कलाकारों द्वारा संस्कृत में रचित पारम्परिक स्तोत्रों एवं गीतों का गायन किया गया।

शास्त्रीय नृत्य प्रशिक्षण कार्यशाला, उज्जैन

कालिदास संस्कृत अकादमी उज्जैन द्वारा 15 दिवसीय शास्त्रीय नृत्य प्रशिक्षण शिविर का शुभारम्भ 30 अप्रैल, 2023 को वरिष्ठ नृत्यगुरु श्री संजीत गंगानी, नई दिल्ली एवं श्रीमती पद्मजा रघुवंशी, उज्जैन के मुख्य आतिथ्य में पं. सूर्यनारायण व्यास बहूद्देशीय सांस्कृतिक संकुल में हुआ। इस अवसर पर 200 प्रतिभागी उपस्थित थे।

इस 15 दिवसीय कार्यशाला का समापन 14 मई, 2023 वरिष्ठ नृत्याचार्य पं. श्रीधर व्यास के आतिथ्य मे सम्पन्न हुआ। समापन अवसर पर लगभग 200 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा कथक नृत्य की रंगारंग प्रस्तुति दी गई। प्रतिभागियों द्वारा प्रथम प्रस्तुति के रूप में गणेश वंदना एवं गणेश परण राग यमन में निबद्ध में की गई। द्वितीय प्रस्तुति सरस्वती वंदना तीन ताल

विलम्बित लय राग–जोग में निबद्ध में, तृतीय प्रस्तुति गुरु वंदना तीन ताल मध्य लय, राग–वागेश्री में निबद्ध में, चतुर्थ प्रस्तुति वरिष्ठ नृत्याचार्य कार्यशाला प्रशिक्षण श्री संजीत गंगानी द्वारा एकल नृत्य एवं अंतिम प्रस्तुति विष्णु वंदना, ताल वसंत 9 मात्रा, राग शिव रंजनी में रंगारंग प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर आमन्त्रित अतिथियों पं. श्रीधर व्यास, श्रीमती पूनम व्यास, श्री अमित श्रीवास्तव द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गए।

वनजन कलाशिविर, तामिया, जिला–छिन्दवाड़ा

वनजन कलाशिविर का आयोजन महाकवि कालिदास के साहित्य पर केन्द्रित 18 से 25 जुलाई, 2023 तक तामिया, जिला–छिन्दवाड़ा में किया गया। 18 जुलाई को शिविर की शुभारम्भविधि सम्पन्न हुई।

शिविर का समापन 25 जुलाई, 2023 को स्थान–मोटल–तामिया, तामिया, जिला–छिन्दवाड़ा में डॉ. विजय माणिकराव ढोरे, वरिष्ठ चित्रकार, आगरा के मुख्य आतिथ्य, पद्मश्री दुर्गा व्याम, भोपाल, शिखर सम्मान प्राप्त श्री नर्मदाप्रसाद तेकाम, भोपाल एवं श्रीमती अगनेस केरकट्टा, भोपाल की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इस शिविर में पद्मश्री दुर्गा व्याम, भोपाल, श्री नर्मदाप्रसाद तेकाम, भोपाल (शिखर सम्मान), सुश्री अग्नेश केरकेट्टा, भोपाल, (शिखर सम्मान), सुश्री नन्दखुशिया श्याम, भोपाल, सुश्री रोशनी व्याम, भोपाल, सुश्री ज्योति उइके पाटनगढ़, श्री बिनामो गमांगो, श्री धर्मांगो सबर, श्री जोगी सबर, श्री कोदान्दा सबर, श्री जुनेश गमांगो, सभी रिजिंगटल पोस्ट पुत्तासिंग, वाई गुनुपुर, जिला–रायगढ़ा, (ओडिसा) ने महाकवि कालिदास के साहित्य पर आधारित चित्रांकन किया।

सारस्वतम्, दतिया

19 अगस्त, 2023 को संस्कृति, संस्कृत, संस्कार शिक्षा समिति एवं श्री पीताम्बरा पीठ संस्कृत महाविद्यालय, दतिया के सहकार से सारस्वतम् लोकप्रिय व्याख्यान सह परिचर्चा का आयोजन किया दतिया में किया गया। इसमें आमन्त्रित विद्वानों ने ''संस्कृत भाषा एवं शास्त्रपरम्परा–नवीन शिक्षानीति के सन्दर्भ में'' शीर्षक पर अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम डॉ. रामेश्वरप्रसाद गुप्त, दतिया, डॉ. अभय कात्यायन, डॉ. श्रीकृष्ण शास्त्री, सेवढ़ा के अतिथ्य में एवं श्री विनोद भारद्वाज, पूर्व न्यायाधीश तथा सलाहकार, श्री पीताम्बरा पीठ संस्कृत महाविद्यालय, दतिया की विशिष्ट सन्निधि में सम्पन्न हुआ।

बालनाट्य समारोह, उज्जैन

बच्चों में संस्कृत रंगमंच के संस्कारों के पोषण के उद्देश्य से दिनांक 23 एवं 24 अगस्त, 2023 को बालनाट्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बाल कलाकारों द्वारा महाकवि कालिदास के साहित्य पर केन्द्रित संस्कृत के पारम्परिक 4 नाटकों की प्रस्तुतियाँ की गई।

23 अगस्त, 2023 को उद्घाटन कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि माननीय श्री रूप पमनानी, वरिष्ठ समाजसेवी तथा माननीय श्री श्रीपाद जोशी, वरिष्ठ रंगकर्मी, उज्जैन थे। उद्घाटन कार्यक्रम पश्चात् ओंमकार सांस्कृतिक संस्थान, उज्जैन द्वारा श्री भूषण जैन के निर्देशन ''विक्रमोर्वशीयम्'' चतुर्थ अंक एवं त्रिनेत्रा सांस्कृतिक संस्थान, उज्जैन द्वारा श्री जगरुप सिंह के निर्देशन में ''अभिज्ञानशाकुन्तम्'' चतुर्थ एवं पंचम अंक की प्रस्तुति की गई।

कार्यक्रम के द्वितीय दिवस 18 अगस्त, 2022 को समापन अवसर पर श्री पायल लोककला मण्डल, दताना, पो.–मताना, उज्जैन द्वारा सुश्री विनीता परमार के निर्देशन में ''कुमारसम्भवम्'' एवं इसके अनन्तर मालविकाग्निमित्रम् नाटक की प्रस्तुति श्री पंकज आचार्य के निर्देशन में प्रतिभापरख नाट्यमंच शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान, उज्जैन द्वारा की गई। समापन

अवसर के अध्यक्ष माननीय श्री केदारनाथ शुक्ल, वरिष्ठ संस्कृत विद्वान्, उज्जैन एवं विशिष्ट आतिथि माननीय श्री विभाष उपाध्याय, उपाध्यक्ष, म.प्र.जनअभियान परिषद्, उज्जैन थे।

संस्कृत गौरव दिवस, विदिशा

26–27 अगस्त, 2023 को पं.गगाप्रसाद पाठक ललित कला न्यास एवं जिला शिक्षा विभाग, विदिशा के सहकार से संस्कृत गौरव दिवस का आयोजन विदिशा में किया गया। विदिशा के पूर्व सभापति श्री मुकेश टण्डन, वरिष्ठ विद्वान् डॉ. भगवत्शरण शुक्ल, वाराणसी, वर्तमान सभापति श्रीमती प्रीति राकेश शर्मा, साहित्य अकादमी भोपाल के निदेशक श्री विकास दवे अतिथि थे। इस अवसर पर विविध प्रतियोगिताओं के विजेता छात्र–छात्राओं को पुरस्कार राशि एवं प्रमाण–पत्र वितरित किये गये। इसके पश्चात् सुश्री भैरवी विश्वरुप एवं साथी, जबलपुर तथा श्रीमती सन्तोष देसाई एवं साथी इन्दौर ने कथक पर केन्द्रित नृत्य नाटिकाओं की प्रस्तुति की।

27 अगस्त, 2023 को प्रातः 10:30 बजे शोध संगोष्ठी का सत्र आयोजित हुआ। इसकी अध्यक्षता डॉ. शीतलाप्रसाद पाण्डेय, वाराणसी ने की। डॉ. माण्डवीशरण त्रिपाठी, शहडोल एवं प्रो. शैलेन्द्र पाराशर, उज्जैन अतिथि थे। इस अवसर पर 16 विद्वानों ने अपने शोधपत्रों का वाचन किया। इसके पश्चात् श्री प्रकाश पाठक, विदिशा ने शास्त्री एवं उपशास्त्रीय गायन की प्रस्तुति की।

संस्कृत नाट्य समारोह, उज्जैन

संस्कृत रंगमंच के संवर्धन के उद्देश्य से संस्कृत नाट्य समारोह का आयोजन 20 से 22 सितम्बर, 2023 तक किया गया। समारोह का शुभारम्भ 20 सितम्बर को माननीय श्री पारसचन्द जैन, विधायक उज्जैन–उत्तर के मुख्य आतिथ्य में, माननीय प्रो. बालकृष्ण शर्मा, पूर्व कुलपति, विक्रम वि.वि., उज्जैन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् यथार्थ सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था, उज्जैन द्वारा श्री प्रकाश देशमुख के निर्देशन में महाकवि भास विरचित ''कर्णभारम्'' की प्रस्तुति की गई। समारोह के द्वितीय दिवस 21 सितम्बर को केन्दीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा डॉ. चन्नबसवस्वामी हिरेमठ के निर्देशन में जयदेव विरचित ''प्रसन्नराघवम्'' की प्रस्तुति की गई।

22 सितम्बर को समापन कार्यक्रम माननीय श्री रोशनकुमार सिंह, आयुक्त, नगर पालिक निगम, उज्जैन के मुख्य आतिथ्य में, माननीय प्रो. विजयकुमार मेनन, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति की अध्यक्षता में तथा वरिष्ठ रंगकर्मी माननीय श्री श्रीपाद जोशी के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् जनस्थान रंगमंच, नासिक द्वारा सुश्री वैदेही मुळये के निर्देशन में ''वंचते–परिवंचते'' नाटक की प्रस्तुति की गई।

कालिदास स्मृति प्रसंग, उज्जैन

देवप्रबोधनी एकादशी के अवसर पर 23 नवम्बर, 2023 को विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के सहयोग से कालिदास स्मृति प्रसंग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रातः महाकवि कालिदास की अराध्या माँ गढ़कालिका मंदिर पर वागर्चन की विधि सम्पन्न हुई। आमंत्रित विद्वानों द्वारा कालिदास विरचित श्यामलादण्डकम् का पाठ किया गया। इस अवसर पर विक्रम विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, माननीय डॉ. बालकृष्ण शर्मा, माननीय डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय के कुलपति, माननीय प्रो. सी.जी. विजयकुमार मेनन, डॉ. पियूष त्रिपाठी, डॉ. रमेश शुक्ल, श्री विनोद काबरा, संत सुन्दरदास सेवा समिति, उज्जैन के श्री मुकुल खण्डेलवाल जी उपस्थित थे। वागर्चन विधि के पश्चात् कालिदास अकादमी परिसर में महाकवि कालिदास जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया तथा कालिदास विरचित ग्रंथों का पूजन् किया गया। तत्पश्चात् विद्वत् संगोष्ठी आयोजित की गई जिसके मुख्य अतिथि के रूप में महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन के

कुलपति माननीय प्रो. सी.जी विजयकुमार मेनन, सारस्वत् अतिथि के रूप में माननीय डॉ. बालकृष्ण शर्मा उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा ने की।

विद्वत् संगोष्ठी का संचालन अकादमी की उपनिदेशक डॉ. योगेश्वरी फिरोजिया ने किया। प्रस्ताविक उद्‌बोधन एवं विद्वानों का सम्मान अकादमी के निदेशक डॉ. गोविन्द गन्धे ने किया। इस अवसर पर डॉ. शुभम् शुक्ला, डॉ. अपेन्द्र भार्गव, डॉ. सत्यम् शुक्ला, डॉ. द्विवेदी, डॉ. मीणा, डॉ. महेन्द्र पण्ड्या, डॉ. सर्वेश्वर शर्मा, डॉ. सन्तोष पण्ड्या आदि विद्वान् उपस्थित थे।

भर्तृहरि–प्रसंग 19 दिसम्बर, 2023

शब्द के विषय में आज विश्व में बहुत चर्चा हो रही है। कोई वाक्य को तो कोई पद को प्रधान मानता है। भर्तृहरि ने शताब्दियों पूर्व वाक्यपदीयम् में वाक्य और पद की विस्तृत व्याख्या की है। आश्चर्य का विषय है कि आज पाश्चात्य विद्वान् नाम चांउन्सकी की चर्चा होती है परन्तु भर्तृहरि से अधिक परिचय नहीं हो पाया है। भर्तृहरि ने अपने ग्रंथ में अखण्ड वाक्य की सिद्धि की है। भर्तृहरि

दार्शनिक, वैयाकरण तथा भाषा तंत्रज्ञ थे। वाक्यपदीयम् में अर्थ सम्बन्ध प्रयोग की द्विविधा व्याख्या हुई है।

ये विचार वरिष्ठ संस्कृत विदुषी और कर्णाटक विश्वविद्यालय, बैंगलुरु की आचार्या डॉ. शिवानी ने कालिदास संस्कृत अकादमी द्वारा आयोजित भर्तृहरि प्रसंग के शुभारम्भ अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किये। अध्यक्षता करते हुए महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति प्रो. विजयकुमार सी.जी. ने कहा कि भर्तृहरि दार्शनिक और वैयाकरण थे। वाक्य और पद के कारण इस ग्रंथ का नाम वाक्यपदीयम् है। इसके तीन काण्डों में लौकिक तथा अलौकिक प्रत्यक्ष, ध्वनि, स्फोट, विवर्त, परिणाम आदि का विस्तार से विश्लेषण हुआ है। भर्तृहरि से हमारी शास्त्र परम्परा गौरवान्वित हुई है।

प्रारम्भ में स्वागत भाषण देते हुए अकादमी के निदेशक डॉ. गोविन्द गन्धे ने कहा कि वाक्यपदीयम् भर्तृहरि का शास्त्रीय ग्रंथ है। उनके तीन शतक लोक में बहुप्रसिद्ध हैं। आज विशेष रूप से वाक्यपदीयम् पर विचार व्यक्त करने के लिये देश के अनेक क्षेत्रों से विद्वान् उपस्थित हुए हैं। हमारा आयोजन विद्वानों की उपस्थिति से सफल हुआ है।

भर्तृहरि साहित्य पर केन्द्रित शोध संगोष्ठी

भर्तृहरि प्रसंग के अवसर पर वाक्यपदीयम् एवं शतकत्रय पर केन्द्रित शोध संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ. बालकृष्ण शर्मा, ग्वालियर ने की। इस अवसर पर डॉ. नीरज शर्मा, पन्ना ने कहा कि वाक्य और पद के साथ ब्रह्मकाण्ड भूमिका रूप में है। व्याकरण के सिद्धान्तों का प्रतिपादक होने से यह प्रकरण ग्रंथ है। डॉ. ओमवती अहिरवार, गुना ने कहा कि नीतिशतक में मानवीय गुणों तथा विद्या का महत्त्व रेखांकित हुआ है। डॉ. नौनिहाल गौतम, सागर ने कहा कि भर्तृहरि भारतीय ज्ञान परम्परा के पोषक एवं प्रवर्तक थे। शब्दब्रह्म का निरूपण वाक्यपदीयम् में हुआ है। डॉ. दुर्गेशलता भगत, इटावा ने कहा कि नीतिशतक में जीवन जीने के आदर्श सूत्र वर्णित हुए हैं। डॉ. संकल्प मिश्र, उज्जैन ने कहा कि भर्तृहरि श्रुतिसम्मत विषयों का प्रतिपादन करते हैं। डॉ. पूजा उपाध्याय, उज्जैन ने कहा कि भर्तृहरि प्रतिभा को प्रमाण रूप में स्वीकार करते हैं। प्रतिभा के छह भेदों का निरूपण वाक्यपदीयम् में हुआ है। डॉ. अखिलेशकुमार द्विवेदी ने कहा कि भर्तृहरि की परम्परा एवं उनके शास्त्र वैशिष्ट्य का विश्लेषण किया। अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए डॉ. बालकृष्ण शर्मा, ग्वालियर ने कहा कि वाक्यपदीयम् संस्कृत का विशिष्ट ग्रंथ है। वे व्याकरण परम्परा के मध्यमणि हैं। भाषा का आनन्द लेने के लिये शास्त्रों का अध्ययन तथा शब्दब्रह्म की उपासना करना चाहिए।

निर्गुणी गायन की सुमधुर प्रस्तुति

इस कार्यक्रम में शास्त्रीय संगीत की गायिका सुश्री माधवी गुर्जर, इन्दौर ने निर्गुणी भजनों की प्रस्तुति से श्रोताओं को भावविभोर किया। आपने भजो रे भैया राम गोविन्द हरि से कार्यक्रम का प्रारम्भ किया। दूसरी प्रस्तुति में माटी कहे कुम्हार से जैसे प्रसिद्ध निर्गुणी भजन की प्रस्तुति कर अन्य रचनाओं का सुमधुर गायन किया। आपके साथ तबले पर श्री राहुल बैने, हारमोनियम पर श्री आस्तिक उपाध्याय तथा पार्श्व स्वर में श्री रवि गोरेले, सभी इन्दौर ने संगत की।

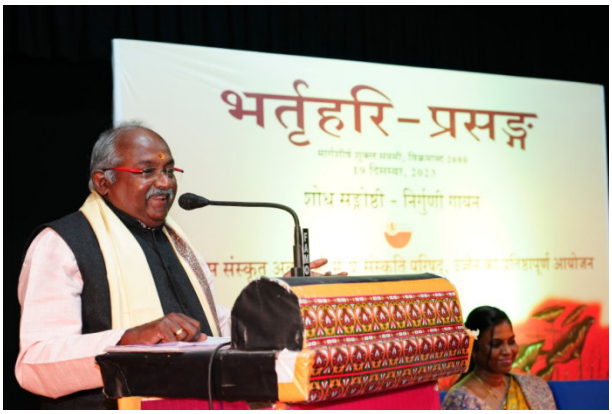

भर्तृहरि प्रसंग 19 दिसम्बर, 2023

19 दिसम्बर, 2023 को भर्तृहरि प्रसंग का आयोजन अभिरंग नाट्यगृह, कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन में किया गया। कार्यक्रम की उद्घाटनविधि वरिष्ठ संस्कृत विदुषी और कर्णाटक विश्वविद्यालय, बैंगलुरु की आचार्या डॉ. शिवानी के मुख्य आतिथ्य तथा महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति प्रो. विजयकुमार सी.जी. की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर आमन्त्रित विद्वानों ने '**भर्तृहरि के वाक्यपदीयम्**' विषय पर केन्द्रित शोधपत्रों का वाचन किया। संगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. बालकृष्ण शर्मा, ग्वालियर ने की। इसके पश्चात् सुश्री माधवी गुर्जर, इन्दौर द्वारा निर्गुणी गायन की प्रस्तुति की गई।

कल्पवल्ली समारोह, उज्जैन 12–13 जनवरी, 2024

12–13 जनवरी, 2024 को कल्पवल्ली समारोह का द्विदिवसीय आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुभारम्भविधि माननीय अनिल जैन कालूहेड़ा, विधायक उज्जैन उत्तर क्षेत्र के मुख्य आतिथ्य, माननीय डॉ. केदारनाथ शुक्ल, उज्जैन की ध्यक्षता एवं माननीय परम पूज्य प.प.यति पुरुषोत्तम आश्रम (दण्डी स्वामी), इन्दौर के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुई। प्रारम्भ में ऋग्वेद की शाकल शाखा की शृंगेरी पद्धति से पाठ वेदमूर्ति श्रीनिवास पेन्यूली नईदिल्ली तथा वेदमूर्ति सत्यम् शुक्ल, उज्जैन ने किया। शाकल शाखा की महाराष्ट्री पद्धति से पाठ वेदमूर्ति विश्वास करहाड़कर, उज्जैन ने किया। तत्पश्चात् शुक्ल यजुर्वेद की काण्व शाखा से वेदपाठ वेदमूर्ति सौरभ बण्डोपन्त शास्त्री एवं वेदमूर्ति आनन्द रत्नाकर जोशी ने किया। शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिनी शाखा से वेदपाठ वेदमूर्ति स्वप्निल पाठक, स्वप्निल लाखे, उज्जैन, मणिकुमार झा, वाराणसी तथा ललिता त्रिपुर सुन्दरी पाठशाला, उज्जैन के वैदिकों ने किया। विद्वानों ने घनपाठ, दण्डपाठ, उपनिषद पाठ भी किया।

इस क्रम में कृष्ण यजुर्वेद से पं. यादवेश शर्मा एवं पं. शिवंकर पाठक, उज्जैन ने संहिता, घन एवं पदपाठ की प्रस्तुति की। सामवेद से पं. मधुकर तैलंग, पं. सौरभ नौटियाल ने शाखास्वाध्याय किया। इसके अन्नतर सामवेद की राणायणी शाखा से पं. दत्तदास शेवड़े एवं पं. नारायणलाल शर्मा ने वेदपाठ किया। अथर्व वेद की शौनक शाखा का पाठ पं. मिथिलेश पण्डेय, पं. ऋषिकेश पाण्डेय, पं. ज्योतिस्वरूप तिवारी, वाराणसी, पं. धर्मेन्द्रकुमार शर्मा एवं पं. सतीश शर्मा ने किया। अथर्व वेद की पैप्पलाद शाखा से पाठ पं. प्रणवकुमार पण्डा ने किया।

समारोह के द्वितीय दिवस धर्मशास्त्रीय कर्मानुष्ठान में मण्डल विधान शीर्षक शोध संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के पूर्व कुलपति प्रो. बालकृष्ण शर्मा ने की। इस सत्र में आमन्त्रित विद्वानों ने अपने शोधपत्रों का वाचन किया।

भवभूति समारोह, ग्वालियर 23–24 जनवरी, 2024

23–24 जनवरी, 2024 को अ.भा. भवभूति समारोह, ग्वालियर में जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर के सहयोग से आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का सहकार महाकवि भवभूति शोध एवं शिक्षा समिति, ग्वालियर द्वारा किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम 23 जनवरी, 2024 के मुख्य अतिथि माननीय श्री विवेक नारायण शेजवलकर, सांसद, ग्वालियर, अध्यक्ष माननीय प्रो. जे.एन. गोस्वामी, कुलाधिसचिव, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, सारस्वत अतिथि माननीय श्री विजय कुमार सी.जी., कुलपति, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन थे। इस अवसर पर आयोजित शोध संगोष्ठी में आमन्त्रित विद्वानों द्वारा महाकवि भवभूति के 'महावीरचरितम् में काव्य सौन्दर्य' शीर्षक पर शोधपत्रों का वाचन किया गया एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में महाकवि भवभूति के महावीरचरितम् नाटक का संस्कृत में मंचन डॉ. हिमांशु द्विवेदी, ग्वालियर के निर्देशन में किया गया।

कार्यक्रम के द्वितीय दिवस 24 जनवरी, 2024 को महावीरचरितम् विषय पर केन्द्रित काव्यपाठ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 6 विद्वानों द्वारा काव्यपाठ किय गया। तत्पश्चात् भवभूति के साहित्य पर आधारित निबंध, वादविवाद एवं श्लोकपाठ प्रतियोगिता के विजेताओं को अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया। ग्वालियर नगर पालिक निगम द्वारा अतिथि, विद्वानों एवं कलाकारों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय डॉ. प्रदीप श्रीवास्तव, उपायुक्त, नगर निगम एवं अध्यक्षता माननीय प्रो. अविनाश तिवारी, कुलपति, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर द्वारा की गई।

अखिल भारतीय
भवभूति समारोह

भवभूति समारोह

भवभूति समारोह

भवभूति समारोह

भोज समारोह, धार 27 जनवरी, 2024

27 जनवरी, 2024 को महाराजा भोज फॉउण्डेशन एवं महाराजा भोज शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धार के सहयोग से भोज समारोह का आयोजन धार में माननीय श्रीमती नीना वर्मा, विधायक, धार के मुख्य आतिथ्य, माननीय श्री दीपक बिडकर, अध्यक्ष, जनभागीदारी समिति, महा. भोज शा.स्ना. महा., धार की अध्यक्षता, माननीय डॉ. रघुवीरप्रसाद गोस्वामी, भोपाल के सारस्वत आतिथ्य एवं माननीय श्री एस.एस. बघेल, प्राचार्य, महाराजा भोज शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धार के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आमन्त्रित विद्वानों ने महाराजा भोज विरचित 'श्रृंगारप्रकाश' पर केन्द्रित शोधपत्रों का वाचन किया।

सारस्वतम् लोकप्रिय व्याख्यान, उज्जैन 1 फरवरी, 2024

1 फरवरी, 2024 को कालिदास संस्कृत अकादमी द्वारा 'राम की तरुणाई–तरुणाई के राम' विषय पर केन्द्रित सारस्वतम् लोकप्रिय व्याख्यान आयोजित हुआ। मुख्य वक्ता प्रो. मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी, इन्दौर थे। इस अवसर पर उज्जैन के डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित एवं वरिष्ठ संगीतज्ञ पं. ओम्प्रकाश शर्मा का भारत सरकार द्वारा पदम्श्री से अलंकृत करने के उपलक्ष्य में सार्वजनिक सत्कार किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. अखिलेशकुमार पाण्डेय ने की। इस आयोजन में राष्ट्रीय सेवा योजना उज्जैन जिले का सहभाग रहा।

वाल्मीकि समारोह, चित्रकूट 22–23 फरवरी, 2024

वाल्मीकि समारोह का आयोजन महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट में किया गया। दिनांक 22 फरवरी, 2024 को कार्यक्रम की उद्घाटनविधि श्री अभय महाजन, संगठन सचिव, दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट के मुख्य आतिथ्य, डॉ. नन्दलाल मिश्र, अधिष्ठाता कला संकाय, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय वि.वि., चित्रकूट की अध्यक्षता, डॉ. कपिलदेव मिश्र, पूर्व कुलपति, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर के विशिष्ट आतिथ्य तथा डॉ. तुलसीदास परौहा, विभागाध्यक्ष, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन के सारस्वत आतिथ्य में सम्पन्न हुई। इसके पश्चात् 'श्रीरंग' संगीत एवं कला संस्थान अनन्त आस्था कला एवं शिक्षा समिति, ग्वालियर द्वारा 'आराधना प्रभु राम की'– शास्त्रीय एवं लोकगीतों की प्रस्तुति सी.एम.सी.एल.डी.पी. सभागार, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट में की गई।

23 फरवरी, 2024 को अमर्त्यसेन सभागार, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय, विश्वविद्यालय, चित्रकूट में 'महर्षि वाल्मीकि रामायण में संवाद' विषय पर केन्द्रित शोध संगोष्ठी का आयोजन डॉ. भरत मिश्र, कुलपति, महात्मा गांधी ग्रामोदय वि.वि., चित्रकूट की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। डॉ. संजयकुमार शास्त्री, रीवा, डॉ. सुश्री ममता गुप्ता, मैहर,डॉ. प्रेमप्रकाश पाण्डेय, डॉ. कमलेश थापक, डॉ. सुरेन्द्र तिवारी, डॉ. कुसुम सिंह तथा डॉ. कविता गौतम, डॉ. प्रमिला मिश्रा सभी चित्रकूट अपने शोधपत्रों का वाचन किया।

शांकर समारोह, 7–8 मार्च, 2024

कालिदास संस्कृत अकादमी म.प्र.संस्कृत परिषद्, उज्जैन द्वारा जिला प्रशासन, खण्डव एवं नगर परिषद्, ओंकारेश्वर के सहयोग से 7–8 मार्च, 2024 को शांकर समारोह का भव्य आयोजन ओंकारेश्वर में सम्पन्न हुआ। इस वर्ष यह समारोह आघशंकराचार्य और अद्वैत वेदान्त विषय पर केन्द्रित था। उक्त विषय पर शोध संगोष्ठी में उज्जैन, मन्दसौर, खण्डवा, बुरहानपुर, इन्दौर आदि स्थानों से आमन्त्रित विद्वानों ने अपने शोधपत्रों के माध्यम से शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त के विविध आयामों को प्रतिपादित किया। द्विदिवसीय सांस्कृतिक संध्या में सुश्री प्रतिभा रघुवंशी एलची. एवं साथी उज्जैन द्वारा महादेव केन्द्रित समूह नृत्य, श्री रविप्रकाश वाजपेयी एवं साथी, उज्जैन द्वारा भक्ति गायन, सुश्री पुष्पलता शर्मा एवं साथी, भोपाल द्वारा लोकगायन, सुश्री शालिनी खरे एवं साथी, जबलपुर द्वारा सती लीला नाट्य तथा श्री अखिलेश तिवारी एवं साथी, भोपाल द्वारा भक्ति गायन की प्रस्तुति की गई।

॥ शाकर महादेव ॥

॥ महादेव ॥
7-8 मार्च 2024

॥ महादेव ॥

॥ महादेव ॥

महादेव ॥

अ.भा. राजशेखर समारोह, जबलपुर, 14–15 मार्च, 2024

महाकौशल से संबंध रखने वाले संस्कृत के महान् कवि, साहित्यकार, शास्त्रों के आचार्य यायावरीय अ.भा.राजशेखर समारोह जबलपुर में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के प्रथम दिवस माँ नर्मदा के तट पर कलश पूजन् के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। कलश पूजन् के अवसर पर रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति प्रो. राजेशकुमार वर्मा, काशी हिन्दु विश्वविद्यालय के प्रो. भगवत्शरण शुक्ल, श्री अटलबिहारी वाजपेयी, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर के आचार्य प्रो. राजीव शर्मा तथा जबलपुर के डॉ. धीरेन्द्र त्रिपाठी उपस्थित थे। कलश पूजन् के साथ भव्य शोभायात्रा भी विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुई। उद्घाटन समारोह में वक्ताओं ने राजशेखर की काव्य प्रतिभा, उनके शास्त्र कौशल्य के विविध पक्षों पर विचार व्यक्ति किये। इस अवसर पर विद्यालयीन छात्र–छात्राओं के लिये विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। शोध संगोष्ठी में कुरुक्षेत्र, वाराणसी, बुन्दी, शहडोल, ग्वालियर, कटनी, जबलपुर के विद्वानों द्वारा 24 शोधपत्र प्रस्तुत किये गये। डॉ. माला प्यासी, जबलपुर की पुस्तक 'महाकौशल की संस्कृत रचना धर्मिता' का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर संस्कृत के विशिष्ट विद्वान् प्रो. रहसबिहारी द्विवेदी का 'विश्वभारती' सम्मान प्राप्त होने के उपलक्ष्य में अभिनन्दन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में सुरी दीक्षा सोनवलकर एवं समूह, उज्जैन द्वारा शास्त्रीय नृत्य नाटिका 'बालरामायण' एवं सुश्री रुचि केशरवानी, जबलपुर द्वारा समूह कथक नृत्य की प्रस्तुति की गई।

राष्ट्रीय कालिदास चित्र एवं मूर्तिकला प्रतियोगिता प्रदर्शनी (वर्ष 2023)
उद्घाटन दिनांक 24 अगस्त, 2024

राष्ट्रीय कालिदास चित्र एवं मूर्तिकला प्रदर्शनी वर्ष 2023 विषय 'कुमारसम्भवम्' का शुभारम्भ संस्कृति मंत्री माननीय श्री धर्मेन्द्र सिंह लोधी के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर अकादमी के निदेशक डॉ. गोविन्द गन्धे, उपनिदेशक डॉ. योगेश्वरी फिरोजिया, वरिष्ठ चित्रकार डॉ. श्रीकृष्ण जोश जी द्वारा दीप प्रज्जवल कर किया गया। इस अवसर पर प्रदर्शनी संयोजक डॉ. सन्दीप नागर ने प्रदर्शनी के केटलॉग एवं अकादमी के यू–ट्यूब चैनल पर प्रदर्शित होने वाले ई–केटलॉग एवं वर्ष 2023 की ई–प्रदर्शनी का विमोचन माननीय मंत्री जी से करवाया गया। माननीय द्वारा प्रदर्शनी के समस्त चित्रों एवं मूर्तियों के साथ अकादमी में अयोजित शिविरों (मंजूषा शैली, उरांव शैली, गोंड शैली एवं राजस्थान की मूर्तिकला मोलेला शैली) में छात्र–छात्राओं द्वारा सृजित किये गये चित्र एवं मूर्तियों का भी अवलोकन किया गया।

संस्कृत गौरव दिवस, विदिशा 30–31 अगस्त, 2024

कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन जिला शिक्षाविभाग एवं पं.गंगाप्रसाद पाठक ललितकला न्यास, विदिशा के संयुक्त तत्त्वावधान में संस्कृत गौरव दिवस का आयोजन 30–31 अगस्त, 2024 को किया गया। इस अवसर पर जिलाशिक्षा विभाग द्वारा प्राथमिक, माध्यामिक एवं उच्चतर माध्यामिक विद्यालयीन स्तर पर संस्कृत गीत, संस्कृत कथाकथन एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गई। कार्यक्रम में देश भर से आमन्त्रित संस्कृत विद्वानों द्वारा ''हमारी अस्मिता : संस्कृत वाङ्मय'' विषय पर केन्द्रित शोधपत्र प्रस्तुत किये गये। समारोह में उज्जैन, भोपाल एवं इन्दौर के सांस्कृतिक दलों द्वारा नृत्य नाटिका की प्रस्तुति की गई। इस अवसर पर विदिशा के वेदज्ञ पं. लोकरे गुरुजी का सारस्वत् सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का शुभारमभ माननीय श्री मुकेश टण्डन, विधायक–विदिशा के मुख्य आतिथ्य, प्रो. शिवाकान्त द्विवेदी, ग्वालियर के सारस्वत आतिथ्य में तथा श्री रोशनकुमार सिंह, जिलाधीश–विदिशा, श्रीमती प्रीति राकेश शर्मा, अध्यक्ष नगर पालिका परिषद्, विदिशा एवं श्रीराम कुमार ठाकुर, जिला शिक्षाधिकारी के विशेष आतिथ्य में अपराह्ण 04:00 बजे विनायक वैंक्युट हॉल में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किये गये। कार्यक्रम में सायंकाल 06:00 बजे उज्जैन के श्री सूरज चक्रावदिया द्वारा पारम्परिक लोकगायन, इन्दौर की सुश्री जयत्रा दवे द्वारा कथक नृत्य एवं डॉ. विजया शर्मा, भोपाल के निर्देशन में कथक नृत्य नाटिका 'भक्तिप्रवाह' की प्रस्तुति की गई।

मध्य प्रदेश संस्कृति विभाग
कालिदास संस्कृत अकादमी म.प्र.संस्कृति परिषद, उज्जैन
का प्रतिष्ठा पूर्ण आयोजन

मध्य प्रदेश संस्कृति विभाग
कालिदास संस्कृत अकादमी म.प्र.संस्कृति परिषद, उज्जैन
का प्रतिष्ठा पूर्ण आयोजन
संस्कृत गौरव दिवस महोत्सव

संस्कृत गौरव दिवस महोत्सव

का प्रतिष्ठा पूर्ण आयोजन
संस्कृत गौरव दिवस महोत्सव